भगवद् गीता का ज्ञान – (11)

" मन को वश में करने से ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है "

- श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के छठे अध्याय के 34वें श्लोक में अर्जुन मन को वश में करने की अपनी समस्या भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख रखते हुए कहता है – "हे कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, प्रमथन-शील (साधक को विचलित करने वाला), जिद्दी और बलवान है; इसलिए उसको वश में करना मैं वायु को रोकने की भान्ति अत्यन्त कठिन कार्य मानता हूँ।" **(गीता – 6:34)**

- अगले श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन की इस मान्यता का अनुमोदन करते हुए मन को वश में करने का उपाय बताते हैं --

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलं।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥६:३५॥

अर्थात - "हे महाबाहो अर्जुन! इसमें संशय नहीं कि यह मन बड़ा चञ्चल है और इसे वश में करना भी बड़ा कठिन है, परन्तु हे कुन्ती-नन्दन! अभ्यास (practice) और वैराग्य (detachment) के द्वारा यह वश में हो जाता है।" **(गीता – 6:35)**

- अब अगले श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण बताते हैं कि मन के निग्रह से ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है –

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः॥६:३६॥

अर्थात - "जिसका मन वश में किया हुआ नहीं है, ऐसे मनुष्य द्वारा योग की प्राप्ति (ईश्वर से साक्षात्कार या आत्मा का परमात्मा से मिलन) अत्यन्त कठिन है, परन्तु मन को में वश में किये हुए साधक के लिए उपाय-पूर्वक प्रयत्न करने से योग की प्राप्ति सहज सम्भव है, ऐसा मेरा मत है।" **(गीता – 6:36)**